भगत नामदेव – सबद २९

आजु नामे बीठलु देखिआ मूरख को समझाऊ रे ॥

रागु बिलावलु गोंड, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ८७३

आजु नामे बीठलु देखिआ मूरख को समझाऊ रे ॥ रहाउ ॥
पाँडे तुमरी गाइत्री लोधे का खेतु खाती थी ॥
लै करि ठेगा टगरी तोरी लाँगत लाँगत जाती थी ॥१॥
पाँडे तुमरा महादेउ धउले बलद चड़िआ आवतु देखिआ था ॥
मोदी के घर खाणा पाका वा का लड़का मारिआ था ॥२॥
पाँडे तुमरा रामचंदु सो भी आवतु देखिआ था ॥
रावन सेती सरबर होई घर की जोइ गवाई थी ॥३॥
हिंदू अंन्ना तुरकू काणा ॥
दुहाँ ते गिआनी सिआणा ॥
हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति ॥
नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति ॥४॥३॥७॥

सार: सर्वव्यापी चेतना वह मूल तत्व है जिसमें समस्त अनुभव घटित होते हैं। उसके बाहर कुछ भी अस्तित्व में नहीं है और वह सदैव उपस्थित रहती है, फिर भी, यह गहन वास्तविकता अक्सर हमारी नज़र से ओझल रह जाती है क्योंकि बाहरी भटकाव हमें इससे दूर खींच ले जाते हैं। यह अज्ञान ठीक वैसा ही है जैसे धूप में खड़े होकर टॉर्च की रोशनी से सूरज को खोजने की कोशिश करना। ऐसा नहीं है कि हमारे भीतर चेतना का अभाव है, बल्कि, हम उस सत्य को पहचानने में चूक जाते हैं जो हमेशा से हमारे ठीक सामने मौजूद रहा है। इस सत्य में स्पष्टता पाना, किसी नई चीज़ को हासिल करने जैसा नहीं है बल्कि यह तो उस वास्तविकता को स्वीकार करना है जो हमेशा से हमारी पहुँच में गहराई से मौजूद रही है।

आजु नामे बीठलु देखिआ मूरख को समझाऊ रे ॥ रहाउ

नामदेव कहते हैं कि आज उन्होंने उस परम सत्य को जान लिया है और अब वह इसे भ्रमित मन को समझाना चाहते हैं। यह कथन बल देता है कि वह सर्वव्यापी चेतना हमारे अपने अनुभवों में ही विद्यमान है, यह हमारी अज्ञानता है जिसके कारण हम उसे पहचान नहीं पाते। (विराम)

पाँडे तुमरी गाइत्री लोधे का खेतु खाती थी ॥

हे पुरोहित! तुम्हारी गायत्री, जो बुद्धि को प्रकाशित करने का स्रोत मानी जाती है, वह किसान के खेत में चर रही थी। यह रूपक उस मुहावरे को दर्शाता है जिसमें कहा जाता है कि मन चरने चला गया है, यह ऐसी हठधर्मी मानसिकता को दिखाता है जो तार्किक और गहन चिंतन से पूरी तरह कटी हुई है। यहाँ 'पुरोहित' हठधर्मिता का प्रतीक है, 'गायत्री' देवी हमारी अंतर्निहित बुद्धि के सहज ज्ञान का प्रतीक हैं, 'खेत में चरना' अज्ञानता का प्रतीक है और 'किसान' अंधविश्वास का प्रतीक है।

लै करि ठेगा टगरी तोरी लाँगत लाँगत जाती थी ॥१॥

एक लाठी से उसकी टांग तोड़ दी गई तब वह लंगड़ाते हुए वहाँ से चली गई। यह प्रतीक है कि जब अज्ञानता अहंकार का रूप ले लेती है तो वह हमारी तार्किक रूप से सोचने की क्षमता को कम कर देती है और हम अपनी अंतर्निहित बुद्धि से कोई भी गहरी सीख या अंतर्दृष्टि प्राप्त नहीं कर पाते। (१)

पाँडे तुमरा महादेउ धउले बलद चड़िआ आवतु देखिआ था ॥

हे पुजारी, मैंने तुम्हारे देवता शिव को एक सफ़ेद बैल पर सवार होकर आते देखा। यह दृश्य नश्वरता को दर्शाता है जिसका प्रतीक शिव हैं, जो अस्तित्व की त्रिमूर्ति में विनाशकारी शक्ति हैं और यह हमें जीवन की वास्तविकता की याद दिलाता है।

मोदी के घर खाणा पाका वा का लड़का मारिआ था ॥२॥

व्यापारी के घर में एक दावत तैयार की गई थी और शिव ने उसके बच्चे को मार डाला। व्यापारी उस मानसिकता का प्रतीक है जो अपनी पहचान पर केंद्रित है, दावत उस अहंकार का प्रतिनिधित्व करती

है जो इस विचार को बनाए रखता है, बच्चा अज्ञानता के परिणाम को दर्शाता है और शिव उस ज्ञान का प्रतिनिधित्व करते हैं जो इस भ्रम को नष्ट कर देता है। (२)

पाँडे तुमरा रामचंदु सो भी आवतु देखिआ था ॥
हे पुजारी, मैंने तुम्हारे देवता, राम चंद्र को भी आते देखा। यह दृश्य सत्यनिष्ठा और साहस के गुणों को साकार करता है।

रावन सेती सरबर होई घर की जोइ गवाई थी ॥३॥
उन्होंने रावण के विरुद्ध युद्ध छेड़ा, हालाँकि, अपनी पत्नी को निर्वासित करके वह स्वयं उसी के समान बन गए। यह उस स्वयं को दर्शाता है जो अपनी बुराइयों पर, जिनका प्रतिनिधित्व रावण करता है, विजय प्राप्त करता है परंतु अपनी धार्मिकता को बनाए रखने के प्रयास में, जिसका प्रतीक राम हैं वह अंततः अपनी ही अंतरात्मा का बलिदान कर बैठता है जिसका प्रतिनिधित्व उनकी पत्नी करती हैं। (३)

हिंदू अंन्ना तुरकू काणा ॥
भारतीय संस्कृति अंधी है, मध्य एशियाई संस्कृति एक-आंख वाली है। यह आलोचना भारतीय संस्कृति में व्याप्त जातिगत भेदभाव की समस्याओं और मध्य एशियाई अद्वैतवाद की बहिष्कृत मानसिकता की ओर संकेत करती है, वह कठोरता जो समग्रता की दृष्टि प्राप्त नहीं कर पाती।

दुहाँ ते गिआनी सिआणा ॥
एक आध्यात्मिक मन इन दोनों से कहीं अधिक प्रबुद्ध होता है। यह आत्म-साक्षात्कारी व्यक्तित्व की समग्र दृष्टि को दर्शाता है जो सांप्रदायिक सीमाओं से ऊपर उठकर अस्तित्व की संपूर्णता का बोध करता है।

हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति ॥
हिंदू मंदिरों में पूजा करते हैं और मुसलमान मस्जिदों में। यह उस भ्रांति को दर्शाता है कि सर्वव्यापी परम-स्रोत केवल मानव-निर्मित सीमाओं और ढाँचों तक ही सीमित है।

नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति ॥४॥३॥७॥
नामदेव कहते हैं कि वह उस शक्ति के प्रति समर्पित हैं जो न तो मंदिर में विद्यमान है और न ही मस्जिद में। यह असीम अवस्था इस बात पर बल देती है कि कोई भी धार्मिक पहचान अथवा सामाजिक ढाँचा किसी आध्यात्मिक मन को सीमित नहीं कर सकता। (४)(३)(७)

तत्त्व: भक्त नामदेव यह दर्शाते हैं कि आध्यात्मिकता की सच्ची समझ सांप्रदायिक विभाजनों से परे जाकर सम्पूर्ण अस्तित्व को अपनाती है। विभिन्न देवी-देवताओं का आह्वान करके और गहन रूपकों का प्रयोग करके, वह इस भ्रामक धारणा को चुनौती देते हैं कि सीमाएँ और संरचनाएँ समस्त जीवन के असीम स्रोत को अपने दायरे में सीमित कर सकती हैं। उनकी अंतर्दृष्टि यह उजागर करती है कि वास्तव में आध्यात्मिक मन किसी भी धार्मिक पहचान या सामाजिक संरचना तक सीमित नहीं हो सकता, वह हमें चेतना की ऐसी असीम अवस्था की संभावना को पहचानने के लिए प्रेरित करते हैं जो हम सभी को आपस में जोड़ती है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com